मेवाड़ मुकुट : कथा/सर्गों का सारांश

उत्तर—श्री गंगारत्न पाण्डेय द्वारा रचित **'मेवाड़ मुकुट'** खण्डकाव्य में देशप्रेमी महाराणा प्रताप के त्याग, साहस और बलिदान का चित्रण किया गया है। राणा प्रताप दिल्ली-सम्राट् अकबर से पराजित होकर अरावली के जंगल में भटकते फिरते हैं, यहीं से प्रस्तुत खण्डकाव्य का प्रारम्भ होता है। यह खण्डकाव्य सात सर्गों में विभाजित है। सर्गानुसार संक्षेप में इसका कथानक इस प्रकार है—

प्रथम सर्ग- अरावली

राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में अरावली पर्वत स्थित है। वह मेवाड़ की रक्षा का दायित्व स्वीकार करके गर्व से अपना मस्तक ऊँचा किए हुए खड़ा है। इस अरावली पर्वत की कन्दराओं में कभी ऋषियों के वेद-मन्त्र गूँजा करते थे। आज वहाँ वीर-भावों से ओत-प्रोत छन्दों के उच्चारण होते हैं। युद्ध में पराजित होने के बाद राणा प्रताप इसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचे थे। यहीं राणा प्रताप की कुटी है, जिसमें वे अपनी पत्नी लक्ष्मी तथा अपने पुत्र व पुत्री के साथ निवास करते हैं। वन में अनेक कष्टों को सहन करते हुए तथा अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए भी राणा प्रताप ने शत्रुपक्ष की कन्या को पुत्रीवत् पाला। यह उनकी शरणागतवत्सलता का प्रमाण है। सर्ग के अन्त में राणा प्रताप की पत्नी महारानी लक्ष्मी अपने पुत्र को गोद में लिए हुए भविष्य की चिन्ता में निमग्न बैठी हैं।

द्वितीय सर्ग- लक्ष्मी

चाँदनी रात का प्रथम प्रहर है। चारों आर शान्ति छाई हुई है। पक्षी दिन भर की थकान के बाद अपने-अपने नीड़ में सोए हुए हैं। इस एकान्त क्षेत्र में रानी लक्ष्मी अपनी कुटिया के बाहर चिन्तित मुद्रा में बैठी हैं। भूखे पुत्र को देखकर उनका हृदय व्याकुल हो उठता है। राणा की सन्तान होते हुए भी आज उसका पुत्र पेट भर दूध तक से वंचित है। रानी लक्ष्मी कहती हैं, "कर्मयोग तो आदर्शमात्र है, कर्मभोग ही सच्चा दर्शन है। सज्जन सर्वदा मार्मिक वेदना को प्राप्त करते हैं, परन्तु कुमार्गी व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।" शत्रु के सामने अपना मस्तक न झुकाने के कारण महाराणा प्रताप इन अपार दुःखों को सहन कर रहे हैं। रानी लक्ष्मी उस शीश के सम्मान की रक्षा के लिए स्वयं तो कष्ट सहन कर सकती हैं, किन्तु अपने पुत्र तथा पुत्री को दुःखी नहीं देख सकतीं। उनके मुख से सहसा ही निकले इन शब्दों को सुनकर महाराणा प्रताप रानी के रोने का कारण पूछते हैं। रानी लक्ष्मी 'कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं' कहकर आँसू पोंछती हुई कुटिया के अन्दर चली जाती हैं। महाराणा प्रताप के नेत्र भी आँसुओं से गीले हो उठते हैं।

तृतीय सर्ग- प्रताप

महाराणा प्रताप कुछ क्षणों तक कुटिया से बाहर ही खड़े रहते हैं, तत्पश्चात् वृक्षों की घनी छाया में आँखें मूँदकर रानी लक्ष्मी के कष्टों के विषय में विचार करने लगते हैं। वे कहते हैं कि कर्त्तव्य का पालन करने से ही यश की प्राप्ति होती है। मेवाड़ को मुक्त कराना ही उनका प्रधान कर्त्तव्य है। इसके लिए वे अपने प्राणों की आहुति तक देने के लिए तैयार हैं। मानसिंह तथा शक्तिसिंह द्वारा शत्रुओं का साथ दिए जाने पर उन्हें खेद है। उनका कहना है कि एक दिन शक्तिसिंह की आत्मा उसे धिक्कारेगी तथा वह वापस लौटेगा। महाराणा प्रताप; चेतक की स्वामिभक्ति तथा शत्रुपक्ष की कन्या 'दौलत' के विषय में भी विचार करते हैं। अपने मन में वे सिसोदिया वंश की आन रखने का संकल्प लेते हैं, लेकिन साधनहीन महाराणा प्रताप इस चिन्ता में अत्यधिक व्याकुल हो रहे हैं कि वे शत्रुपक्ष का सामना किस प्रकार करें।

चतुर्थ सर्ग:- दौलत

दौलत चिन्तित मुद्रा में लताओं से ढके घने वृक्ष की छाया में बैठी हुई है। वह अपने बीते हुए जीवन के बारे में विचार करती हुई कहती है, "उस भोग–विलास भरे जीवन में कटुता ही थी, प्रीति नहीं।" दौलत को विगत जीवन कभी भी अच्छा नहीं लगा। प्रताप की सज्जनता को देखकर वह महाबली अकबर के विषय में विचार करती हुई कहती है, "अकबर यह क्यों नहीं समझते कि ईश्वर ने सबको समान बनाया है।" वह शक्तिसिंह और प्रताप में तुलना करती हुई कहती है कि "ये सूर्य हैं, वह दीपक है।" दौलत महाराणा प्रताप के लिए कुछ करना चाहती है। इसी समय विचारों में मग्न दौलत को किसी की पदचाप सुनाई देती है। यहीं पर इस सर्ग का अन्त हो जाता है।

पंचम सर्ग: चिंता

महाराणा प्रताप की पदचाप सुनकर दौलत खड़ी हो जाती है। महाराणा प्रताप उससे एकान्त में बैठने का कारण पूछते हैं। दौलत महाराणा के प्रश्न का उत्तर देते हुए अपने आप को दु:खी बताती है। अपनी व्यथा का कारण बताते हुए दौलत कहती है, "मुझे डर है, कहीं मेरे कारण मेवाड़ के मुकुट की मर्यादा न समाप्त हो जाए।" दौलत पूछती है, "आपकी चिन्ता का कारण मैं तो नहीं हूँ?" प्रताप भावुक हो उठते हैं और कहते हैं कि उसे (दौलत को) प्राप्त करके वे बहुत सुखी हैं, लेकिन वे रानी लक्ष्मी की आँखों में अश्रुओं को देखकर चिन्तित हो उठे हैं। दौलत तथा महाराणा प्रताप रानी लक्ष्मी के पास जाते हैं। रानी मेवाड़ की दु:खद दशा के कारण चिन्तित हैं। दौलत अपनी माता से उदासी का कारण पूछती है। लक्ष्मी पूरे परिवार को अभागा बताती है। महाराणा प्रताप कहते हैं कि आज उन्होंने मेवाड़ को मुक्त कराने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। इसके लिए वे सिन्धु देश से साधन प्राप्त करने की बात करते हैं और अकबर से युद्ध के लिए भी तत्पर हो जाते हैं। क्षत्राणी होने के कारण रानी लक्ष्मी भी मेवाड़ की स्वाधीनता हेतु सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर हो जाती हैं। तत्पश्चात् प्रताप अगले दिन प्रस्थान का निश्चय सुनाते हैं।

षष्ठ सर्ग: पृथ्वीराज

'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य का षष्ठ सर्ग कवि पृथ्वीराज की चारित्रिक विशेषताओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। इस सर्ग में महाराणा प्रताप प्रात:काल

में प्रस्थान का प्रबन्ध कर रहे हैं। इतने में ही एक विश्वासी अनुचर आकर राणा को एक पत्र देता है। यह पत्र पृथ्वीराज द्वारा भेजा गया है। पृथ्वीराज अकबर के कवि-सखा हैं; किन्तु महाराणा से भेंट करने पर वे उनकी प्रशंसा करते हैं और उन्हें अकबर के साथ युद्ध करने के लिए प्रेरित करते हैं। राणा प्रताप अपनी साधनहीनता की बात कहते हैं। इस पर पृथ्वीराज महाराणा प्रताप को भामाशाह का परिचय देते हैं और बताते हैं कि वे आपकी प्रत्येक प्रकार से सहायता करने को तत्पर हैं। पृथ्वीराज भामाशाह को बुलाने के लिए राणा की आज्ञा भी लेते हैं।

सप्तम सर्ग-भामाशाह

महाराणा प्रताप भावी जीवन में आनेवाले नए मोड़ के विषय में सोच रहे हैं। तभी हिरनों का समूह वन में घूमता हुआ उनके सामने से निकलता है। इसी समय महाराणा प्रताप तथा मातृभूमि की जय-जयकार करते हुए भामाशाह वहाँ उपस्थित होते हैं। भामाशाह महाराणा प्रताप को अपने पूर्वजों की संचित समस्त सम्पत्ति को समर्पित करना चाहते हैं, परन्तु प्रताप पराया धन कहकर इसे अस्वीकार कर देते हैं। भामाशाह पराए धन के विषय में प्रताप के भ्रम को दूर करते हैं और कहते हैं कि यह उनका अपना ही धन है। इस बात को सुनकर प्रताप भामाशाह को कण्ठ से लगा लेते हैं। उनमें नई शक्ति का संचार होता है। महाराणा प्रताप देश पर मर-मिटने के लिए तत्पर हो जाते हैं। यहीं 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य की समाप्ति हो जाती है।